

संक्षिप्त-रिपोर्ट

19वां राष्ट्रीय सम्मेलन एवं मेडिटेशन रिट्रीट विषय- "मानव अस्तित्व हेतु आध्यात्मिकता – नए आयम की खोज"

दिनांक: 28 अगस्त से 1 सितंबर 2025

स्थान: हार्मनी हॉल, ज्ञान सरोवर, माउण्ट आबू

स्वागत-सल

भारत तथा विदेश के विभिन्न शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं शोध संस्थाओं से आए हुए लगभग 500 अत्यंत बुद्धिजीवी, वैज्ञानिक रूप से दक्ष एवं प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में “19वीं स्पार्क एस.आई.आर राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस एवं मेडिटेशन रिट्रीट” जिसका विषय “मानव अस्तित्व हेतु आध्यात्मिकता – नये विकल्प की खोज”, का आरम्भ 28 अगस्त 2025 की संध्या को ब्रह्माकुमारीज के मनोहर, शान्त एवं दिव्य स्थल, ज्ञान सरोवर में हुआ।



L to R: BK Sanjay, HQs Coordinator, SpARC Wing, Dr. Rajesh Saxena, Head Scientific Advisor, Patanjali Research Foundation Trust, Haridwar, Rajyogini BK Ambika, Chairperson, SpARC Wing, BK Prabha, Director, Gyan Sarovar, Mt. Abu.

सभी प्रतिनिधियों एवं गणमान्य अतिथियों का शब्दों, सांस्कृतिक गीत, नृत्य, बैज एवं पुष्पगुच्छों के माध्यम से हार्दिक स्वागत किया गया। इस सल में, स्पार्क (SpARC) विंग की अध्यक्षा, राजयोगिनी अम्बिका दीदी ने सभी को संबोधित करते हुए सम्मेलन के विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तकनीक का बढ़ता हुआ प्रभाव मानवीय-मूल्यों एवं मानव-अस्तित्व के लिए एक चुनौती बनता जा रहा है। इसका प्रभावी और स्थायी समाधान यही है कि हम परमात्मा द्वारा प्रदत्त सच्चे ज्ञान को अपनाएँ और अपने भीतर छिपे हुए दिव्य खजाने को पुनः जागृत करें।

मुख्य अतिथि डॉ. कामाक्षी अय्यर, प्रो-वाइस चांसलर, यूनिवर्सल स्किलटेक, मुंबई ने समस्याओं पर नहीं बल्कि उनके समाधानों पर केंद्रित रहने की बात करते हुए अपने विचार साझा किए और यह उद्घोषणा की कि उनकी यूनिवर्सिटी में राजयोग सेंटर एवं राजयोग थॉट लैब स्थापित

की जाएगी। ज्ञान सरोवर की निदेशिका, राजयोगिनी प्रभा दीदी ने कहा कि भौतिक उपलब्धियों, डिग्रियों, पुरस्कारों आदि से तो सुख मिल सकता है किन्तु वास्तविक सफलता तभी मिलती है जब हम राजयोग के गहरे सागर में उतरकर ज्ञान के रत्नों को आत्मसात करें। स्पार्क प्रभाग दिल्ली एवं दिल्ली एन. सी. आर. की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर, राजयोगिनी सरोज दीदी ने मार्गदर्शित योग (Guided Meditation) के माध्यम से सभी को गहन शान्ति का अनुभव कराया। सेवानिवृत्त, अतिरिक्त मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार से डॉ. ललित वर्मा ने ध्यान और आध्यात्मिकता के महत्व एवं उसके विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान युग में इसकी अत्यंत आवश्यकता है। गेस्ट ऑफ ऑनर, श्री राजेश सक्सेना, हेड साइंटिफिक एडवाइज़र, पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन ट्रस्ट, ने कहा कि आध्यात्मिक होने का अर्थ है प्रकृति, पड़ोस और पर्यावरण के साथ एकत्व अनुभव करना। उन्होंने कहा कि यदि हम अपने दिल की सुनें और प्रकृति के करीब रहें तो हम स्वस्थ और खुशहाल जीवन जी सकते हैं। डॉ. अमूथा वरथराजू, विभागाध्यक्ष, आपातकालीन चिकित्सक, बुकीत मर्तजाम अस्पताल, मलेशिया ने अपने शुभकामनापूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि विज्ञान भी यह प्रमाणित करता है कि नकारात्मक विचार मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। शरीर और मन के बीच संबंध को स्पष्ट करते हुए उन्होंने आश्चर्य किया कि वे अपने व्यावसायिक कार्यों तथा भावी शोध परियोजनाओं में राजयोग को अपनायेंगी।



R to L: Dr. Amutha Varatharajoo, HOD, Emergency Physician Hospital, Bukit Mertajam, Malaysia, Rajyogini BK Saroj, Zone Coordinator, SpARC Wing, Delhi NCR, Dr. Kamatchi Iyer, Pro-VC, Universal Skilltech University, Mumbai, Rajyogini BK Alka, Zone Coordinator, SpARC Wing, Maharashtra Zone.

पूर्व- उद्घाटन सत्र

प्रो. कमलेश झा, विभागाध्यक्ष, शरीर क्रिया विज्ञान, एम्स, पटना तथा डॉ. रामजयम, सहायक प्राध्यापक, आई.के.एस, आई.आई.टी. मंडी ने संक्षेप में अपने शोध अनुभव साझा किए। साथ ही उन्होंने आगामी शोध गतिविधियों की जानकारी दी, जैसे- स्वास्थ्य, जीवनशैली, विचारों एवं तकनीक पर राजयोग का प्रभाव आदि।

उद्घाटन-सत्र



इस चार दिवसीय सम्मेलन का औपचारिक उद्घाटन, दीप प्रज्वलन तथा गणमान्य व्यक्तियों एवं उपस्थित जनसमूह के स्वागत के साथ हुआ।

राजयोगी बी.के. श्रीकांत, नेशनल कोऑर्डिनेटर, स्पार्क विंग ने 2007 से प्रतिवर्ष एस.आई.आर. कॉन्फ्रेंस आयोजित करने के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी की यह इच्छा थी कि स्पार्क द्वारा किए गए आध्यात्मिक शोधों के निष्कर्षों को वैज्ञानिक जगत के साथ साझा किया जाए। उन्होंने सम्मेलन की शोभा बढ़ाने वाले सभी गणमान्य व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया।

राजयोगिनी बी.के. अम्बिका, चेयरपर्सन, स्पार्क विंग ने इस तथ्य पर चिन्ता व्यक्त की कि आधुनिक तकनीकी प्रगति के बावजूद मानवता संकट की ओर बढ़ रहा है। इसका कारण है आन्तरिक और बाह्य संसार के बीच असंतुलन। उन्होंने उपस्थित सभी अतिथियों से आग्रह किया कि वे प्रतिदिन 45 मिनट का सात दिवसीय राजयोग कोर्स करें ताकि वे अपने जीवन और मन के स्वामी बन सकें।

राजयोगी बी.के. मृत्युञ्जय, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ ने अपने प्रेरणापूर्ण उद्गारों को व्यक्त करते हुए कहा कि केवल आध्यात्मिकता ही आनंदमय, जागरूक और शान्त मन का निर्माण कर सकती है। समाज को

तभी लाभ होगा जब ए.आई. और तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाएगा।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि डॉ. सारस्वत, माननीय सदस्य, नीति आयोग, ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किया गया शोध यदि विज्ञान के साथ मिलकर किया जाए तो यह मानवता के लिए अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हो सकता है। उन्होंने आध्यात्मिकता को आन्तरिक विकास और सार्वभौमिक सामंजस्य का विज्ञान बताया। उन्होंने यह भी कहा कि विज्ञान चाहे कितना भी गहरा क्यों न जाए वह चेतना (आत्मा) और परमात्मा के जुड़ाव की व्याख्या नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि यदि ए.आई. को सहानुभूति, करुणा और सत्य जैसे मूल्यों द्वारा मार्गदर्शित किया जाए तो यह भविष्य की तकनीक को सही दिशा देकर मानवता की सच्ची सेवा में सहायक हो सकता है।

प्रतिनिधियों का अभिवादन करते हुए माननीय श्री अजय महावर, विधायक, दिल्ली सरकार ने ब्रह्माकुमारीज़ को आध्यात्मिक जागरूकता, भाई-चारा, करुणा, निःस्वार्थ सेवा और पारदर्शिता का जीवंत उदाहरण बताते हुए सराहा। उन्होंने कहा कि मानवता को केवल ए.आई. के विवेकपूर्ण उपयोग से ही लाभ मिल सकता है। साथ ही प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने हेतु उन्होंने भावपूर्ण अपील की कि प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम 15 पौधे लगाने चाहिए ताकि हमें उनसे प्राप्त ऑक्सीजन का प्रतिदान किया जा सके।

इस अवसर के विशिष्ट अतिथि, डॉ. विनोद वर्मा, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, ग्रुप कॉर्पोरेट अफेयर्स एवं हेड रेग्युलेटरी अफेयर्स, हिंडाल्को ने ब्रह्माकुमारीज़ की समग्र गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रदान किया जा रहा आध्यात्मिक ज्ञान ही शान्ति और आनंदमय जीवन की राह है। सत्र का समापन प्रो. डॉ. कांतिलाल नागरे, सदस्य, स्पार्क कोर ग्रुप, कल्याण (महाराष्ट्र) द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन के साथ हुआ।

पोस्टर-सत्र

कुछ शोधकर्ताओं ने अपने शोध कार्यों को पोस्टर के माध्यम से प्रदर्शित किया। इनमें शामिल थे : डॉ. हर्षवर्धन श्रीवास्तव, सहायक प्राध्यापक, केशव लॉ कॉलेज, हरियाणा – “Bharat's Traditional Knowledge – Spirituality and Global Peace”, डॉ. त्रिबिक्रम गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, आर.वी. कॉलेज, बेंगलुरु- “Role of Spirituality in Pursuit of Science”, डॉ. राजेश अरोड़ा, वरिष्ठ प्राध्यापक, मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता विभाग, एम.आई.यू. एंड केयर, शान्तिवन- “Ventilation through writing: A Spiritual practice within BKs as a part of healthy lifestyle tilted to the biological lock for prevention and regression of lifestyle diseases”, सुश्री गायत्री जवाहरलाल तेली, शोध छात्रा, के.बी.सी.एन.एम.यू., जलगांव- “Consciousness & Significance of Spirituality in Development of Human Personality”, श्री लीकेश्वर, शोध छात्र, योग विज्ञान विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय- “Cultural Significance of Death and Rebirth in Bharatiya and Global Philosophies”, डॉ. स्मिता गुप्ता- “Exploring linkages of University Teacher's Spiritual synergies, occupational stress and satisfaction”, श्री के.के. पारही- “Spirituality for Human Existence – Innovating Newer Avenues”, श्री रवि सैनी, शोध छात्र, योग विज्ञान विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार- “Transforming the Self : How Rajyoga Meditation Improves Mind and Moral Values”, श्री अर्जुन राम रोज- “Breath of Recovery: Effects of a Structured Yoga Pranam on Pulmonary Function in Men with chronic Opium Dependence in Western Rajasthan- a Pre-post Intervention Study”, डॉ. एस.के. पाणिग्रही, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग, डिफेंस इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड

टेक्नोलॉजी, पुणे- “Spirituality for Human Existence: History, Approach and Application”, सुश्री गरिमा बंसल, शोध सहयोगी, यूनिवर्सिटी ऑफ जोहान्सबर्ग- “Mathematics Meets Mindfulness: Story Telling as a Tool for Graph Comprehension and Self Reflection”, श्री रामकृष्ण नानगीर बावा, शोध छात्र, के.डी.बी.एन.एम.यू., जलगांव- “Environmental Development in human civilization through spiritual awareness”, श्री चैतन्य कौशल, “Effect of Isometric Exercises and Trataka Training on Physical and Psychological Variables of Cricket players”, डॉ. राम बिलास अग्रवाल, सहायक प्राध्यापक, आर.वी. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, बेंगलुरु- “A Study of non-performing assets of small & marginal Farmers of Rajasthan”, देबज्योति घोष- “Scalable Opportunistic Shortest Path Problems on Road Networks”, श्री चिलुकुरी बाला वेंकट सुब्बारायुडु – “Indian Knowledge System- Importance of Traditional, Spiritual and Integrated Human Values in Education”, श्री सुदर्शन राज, भुवनेश्वर- “Importance of Spirituality.”

खुला-सत्र

विषय: राजयोग विज्ञान के माध्यम से आंतरिक परिवर्तन

सत्र के अध्यक्ष श्री श्याम सुंदर, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), संचार एवं आई.टी. मंत्रालय, जयपुर ने कहा कि राजयोग केवल एक तकनीक नहीं बल्कि परमात्मा के साथ एक दिव्य संबंध है जो सृजनात्मकता, गुणात्मक विकास आदि को बढ़ाता है। उनका मत था कि यदि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध ज्ञान का सही प्रकार से उपयोग न किया जाए तो वह निरर्थक है। इस अवसर के मुख्य अतिथि, प्रो. मान सिंह, स्कूल ऑफ केमिकल साइंसेज़, केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर ने जोर देकर कहा कि आध्यात्मिकता और विज्ञान

एक-दूसरे के पूरक हैं और वैज्ञानिक सबसे पहले आध्यात्मिक प्राणी होते हैं। आध्यात्मिकता नये आयाम खोलती है, संभावित ऊर्जा का रूपांतरण करती है और मन व शरीर का संतुलन स्थापित करती है जिससे हम व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर एक मूल्यवान संपत्ति बन जाते हैं। मुख्य वक्ता के रूप में राजयोगी सूर्य, वरिष्ठ राजयोग शिक्षक, ने समाज में व्याप्त शारीरिक और मानसिक समस्याओं तथा उनके कारणों पर प्रकाश डालते हुए सरल शब्दों में बताया कि राजयोग का अभ्यास इन समस्याओं का सामना करने और उन्हें दूर करने में कैसे सहायक है। उन्होंने यह भी कहा कि ईश्वर सबसे सूक्ष्म सत्ता है और इसीलिए सबसे शक्तिशाली हैं। और जब हम उनसे संबंध स्थापित करते हैं तो हम सशक्त हो जाते हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ - अब तक का सफ़र

(संस्था का इतिहास)

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्रह्माकुमारीज़ माउंट आबू, राजयोगिनी बी.के शीलू ने ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना से लेकर आज तक की यात्रा के बारे में बताया कि किस प्रकार यह संगठन विभिन्न चुनौतियों को पार करते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित हुआ तथा विश्व में व्याप्त विभिन्न संस्कृतियों के बीच शान्ति और सद्भाव की शक्ति का प्रसार कर रहा है।

प्लेनरी सत्र- 01

विषय: स्वयं को चुनौती देना - नवाचार की कुंजी

सत्र के अध्यक्ष, संयुक्त निदेशक (आई.टी.), रजिस्ट्रार जनरल कार्यालय, गृह मंत्रालय के डॉ. पदराबिंदा राठ ने इतिहास से उद्धरण देते हुए ठोस(tangible) और अमूर्त(non-tangible) नवाचारों पर चर्चा की। उन्होंने बी.के संगठन द्वारा किए गए कुछ ठोस नवाचारों का उल्लेख किया जैसे - इंडियन वन सोलर सिस्टम, योगिक जैविक कृषि, दादी जानकी फाउंडेशन, ग्लोबल पीस इनिशिएटिव, मेगा ग्रीन किचन आदि। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ संगठन की विशिष्टता - स्व एवं परमात्मा का साक्षात्कार की सराहना की। मुख्य अतिथि श्री संजय बंसीलाल चोरडिया, चेयरमैन, सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स ने कहा कि बी.के संस्था स्वयं परमात्मा का नवाचार है, जिसने 80 से अधिक वर्षों में अपने पंख पूरी दुनिया में फैला लिए हैं और एक मिलियन से अधिक लोग इस ध्यान पद्धति के अभ्यास में जुड़े हैं। मुख्य वक्ता राजयोगिनी अंबिका, चेयरपर्सन, SpARC विंग ने कहा कि परमात्मा सर्वोच्च वैज्ञानिक ने हमें विविध नवाचारों से संपन्न किया है जैसे समानता, स्वतंत्रता, भ्रातृत्व, अपार सुख आदि किंतु समय के साथ और प्रकृति के सनातन नियमों के अनुरूप, विश्व विनाश की ओर अग्रसर होता प्रतीत हो रहा है। उन्होंने यह भी साझा किया कि प्रतिकूल प्रभावों को कैसे पलटा जाए और आगामी पीढ़ियों के लिए दुनिया को एक बेहतर स्थान बनाया जाए।

प्लेनरी सत्र- 02

विषय: ए.आई. के युग में नैतिकता

सत्र के अध्यक्ष श्री अर्थ बंधु साहू, निदेशक, आई.सी.ए.आर. ने कहा कि ए.आई. ज्ञान का अर्जन और अनुप्रयोग दोनों है। ए.आई. विश्लेषणात्मक और भविष्यवाणी से जुड़े कार्यों के लिए विभिन्न मानकों के साथ अच्छा है। किन्तु जब ज्ञान का प्रयोग नैतिकता के बिना किया जाता है तो वह विघटनकारी बन जाता है। महाभारत, रामायण और पशु विज्ञान से कुछ उदाहरण उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि हम ज्ञान का प्रयोग अपने जीवन में कैसे करते हैं। इस सत्र के मुख्य अतिथि श्री निलेश एम. देसाई, निदेशक, एस.ए.सी., इसरो, अहमदाबाद ने कहा कि यदि ए.आई. हमें नियंत्रित करता है तो यह सबसे विघटनकारी तकनीक है। सामान्यतः किसी भी नयी तकनीक का आरंभिक रूप में विरोध होता है किन्तु समय के साथ उसका उपयोग स्वीकार कर लिया जाता है। मुख्य वक्ता राजयोगिनी बी.के उषा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ने कहा कि जैसे ईश्वर सृष्टि का सृजन, पालन और संहार करते हैं उसी प्रकार ए.आई. भी है। ए.आई. इस समय सृजन के चरण में है जहाँ कुछ अपूर्णताएँ हैं किन्तु समय के परिवर्तन के साथ, नए युग में ए.आई. का परिष्कृत स्वरूप संरक्षण और पालन का उत्तरदायी होगा और निस्संदेह वर्तमान समय में ए.आई. का अनैतिक प्रयोग विनाश का कारण बनेगा। अन्य किसी भी तकनीक की तरह, ए.आई. भी उसके उपयोग पर निर्भर करते हुए लाभकारी या विघटनकारी हो सकता है।

प्लेनरी सत्र-03

विषय: सतत भविष्य के लिए प्रकृति का पोषण करने वाली नैतिकता

सत्र के अध्यक्ष डॉ. पंकज कुमार, वैज्ञानिक 'एफ', ग्रुप-प्रभारी, ए.एम. एस. और भू-कालानुक्रम IVAC, नई दिल्ली, ने कहा कि बेहतर भविष्य और आने वाली पीढ़ियों के लिए आज हमें अपनी गतिविधियों पर गहराई से विचार करना चाहिए। उन्होंने स्थिरता (sustainability) की परिभाषा देते हुए कहा – ऐसे कार्य करना जिनसे भविष्य प्रभावित न हो। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र द्वारा सूचीबद्ध 17 लक्ष्यों का उल्लेख किया और बताया कि उनमें ब्रह्माकुमारीज़ संगठन सबसे आगे है। मुख्य अतिथि डॉ. गिरीश मित्तल, उद्यमी, लेखक, नीतिगत विश्लेषक एवं समाजसेवी ने वर्तमान में हो रहे प्राकृतिक आपदाओं पर चर्चा की और उन्हें नियंत्रित करने के उपाय सुझाए।

तकनीकी शोध-पत्र प्रस्तुति

डॉ. ज्ञानेंद्र तिवारी, सहायक प्राध्यापक, कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग, बी.आई.टी., पटना ने “डिप्रेशन और एंग्ज़ाइटी डिटेक्शन यूज़िंग ई.ई.जी., ऑडियो एवं फेशियल डाटा बेस्ड ए.आई. मॉडलिंग” विषय के अंतर्गत बताया कि ए.आई. संचालित मल्टी-मॉडल विश्लेषण कैसे ई.ई.जी., ऑडियो एवं चेहरे के डाटा से अवसाद और चिंता का प्रारंभिक, वस्तुनिष्ठ एवं सुलभ पता लगाने में सहायक है।

डॉ. रेनुका जाखड़, सहायक प्राध्यापक, एस.जी.टी. यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम ने गहरी श्वसन क्रिया, रेंज ऑफ मोशन एक्सरसाइज़ और राजयोग मेडिटेशन अभ्यास के माध्यम से गर्दन के दर्द एवं अकादमिक तनाव को कम करने की प्रभावशीलता पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

के.एम. मेघा, शोध छात्रा, योग विभाग ने नादमय मेडिटेशन और माईंड वांडरिंग के इलेक्ट्रोफिज़ियोलॉजिकल सहसंबंध विषय पर नादमय ध्यान की प्रभावशीलता बता जो शान्त और सजग मानसिक स्थिति को प्रोत्साहित करता है।

श्री वर्धन सिंह सैनी, शोध छात्र ने ध्यान के दौरान रीढ़ की थकान को रोकने हेतु बायोमैकेनिकल और एलाइनमेंट सिद्धांतों का उपयोग विषय पर अपने विचार साझा किए।

सुश्री मनीषा बी. पाटिल, शोध छात्रा ने कामकाजी महिलाओं और आध्यात्मिकता पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन विषय के अंतर्गत बताया कि आध्यात्मिकता किस प्रकार कार्य-जीवन संतुलन, तनाव प्रबंधन और समग्र कल्याण में सहायक है।

सुश्री शुभांगी पूरी, शोध छात्रा ने परिवर्तनशील विश्व में किशोर मानसिक स्वास्थ्य सुनिश्चित करने हेतु राजयोग मेडिटेशन विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

श्री हरिओम, शोध छात्र ने शिव संकल्प सूक्त में मानस तत्व की अवधारणा और मनोदैहिक कल्याण में इसकी संभावित भूमिका विषय पर समग्र स्वास्थ्य के लिए एकीकृत दृष्टिकोण साझा किया।

उन्होंने 10 अलग-अलग लक्ष्यों का उल्लेख किया जिन्हें ब्रह्माकुमारीज़ संगठन ने लागू किया है और सफलता प्राप्त की है। मुख्य वक्ता बी.के. बाला किशोर, उपाध्यक्ष, Better Living at Searce Technologies ने कहा कि आत्म-जागरूकता का असर दृष्टिकोण पर पड़ता है, दृष्टिकोण का असर दृष्टि पर, दृष्टि का असर कर्म पर और कर्म का असर सृष्टि पर। इसलिए आत्मा की चेतना में रहते हुए स्वयं और आसपास दोनों में परिवर्तन महसूस किया जा सकता है। सतत भविष्य के लिए आज आत्मा-चेतना का अभ्यास करना अत्यंत आवश्यक है। सत्र की समन्वयक, SpARC कोर ग्रुप सदस्य, बी.के. एकता ने सुंदर ढंग से सार प्रस्तुत किया - जो कुछ हमारे जीवन से कम हो गया है उसे पुनः उपयोग(reuse) और पुनः चक्रण (recycle) के माध्यम से वापस लाना चाहिए।

डॉ. रंजीत कुमार, रसायन विभाग, विज्ञान संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट, आगरा ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन में धर्म की भूमिका विषय के अंतर्गत धर्म, विज्ञान और सामुदायिक शासन आधारित एक मॉडल साझा किया।

डॉ. संजय कुमार सिन्हा, एसोसिएट प्रोफेसर ने रियल-टाइम मेडिकल इमेजिंग के लिए आई.ओ.टी. आधारित कम लागत वाला पोर्टेबल अल्ट्रासाउंड सिस्टम पर अपने विचार साझा किए।

डॉ. राजेश अरोड़ा, वरिष्ठ प्राध्यापक, मणिपुर इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी एवं केयर ने आपके इंटेलेजेंस टाइप पर आधारित राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करने के आठ तरीके विषय में बताया कि राजयोग ज्ञान, सद्गुण, भावनात्मक संतुलन आदि को कैसे बढ़ाता है।

डॉ. साधना जैन, प्रोफेसर, आदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय ने व्यक्ति के जीवन में मानसिक अवस्था की रूपांतरणीय शक्ति की भूमिका विषय के माध्यम से आध्यात्मिक अभ्यास एवं मस्तिष्क अनुसंधान के जरिए विकास और कल्याण पर प्रकाश डाला।

डॉ. रंजिता भौमिक शास्त्री, सहायक प्राध्यापक, एस.डी.जे. इंटरनेशनल कॉलेज, वेसु, सूरत ने संगठनात्मक आध्यात्मिकता की मध्यवर्ती भूमिका: आत्म-उत्थान, आध्यात्मिक उत्थान और रचनात्मक कार्य-प्रथाओं के बीच संबंध का विश्लेषण विषय पर प्रस्तुत किया।

डॉ. श्रीकांत जे. यादव, संस्थापक एवं रिसर्च हेड, एम.डी. (वैकल्पिक चिकित्सा), यूनिक ब्रेन अकादमी, मुंबई ने ई.एस.पी ब्रेन योगा विषय पर साझा किया जिसमें न्यूरोसाइंस, ध्यान और भारतीय ज्ञान प्रणाली को जोड़कर रचनात्मकता, भावनात्मक संतुलन और समग्र विकास के लिए छिपी क्षमताओं को उजागर करने की अवधारणा प्रस्तुत की।

सुश्री संगीता नटराजन, संस्थापक ह्यूमन ओ.एस., मोटिवेशनल स्पीकर एवं वेलनेस कोच ने शिक्षा में आध्यात्मिकता, व्यक्तिगत विकास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समन्वय कर अकादमिक्स से परे मानवीय व्यक्तित्व का विकास विषय पर प्रस्तुत किया, जिसका शीर्षक था शिक्षा में लापता कड़ी: बच्चों के समग्र विकास और प्रगति के लिए।

विशेष सत्र

बी.के. जयन्ती, अतिरिक्त प्रशासनिक प्रमुख, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू ने कहा कि हमें भीतर की ओर, ऊपर की ओर और फिर बाहर की ओर बढ़ना चाहिए ताकि हम वह परिवर्तन ला सकें जिसे हम संसार में देखना चाहते हैं। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार ऊर्जा उच्च अवस्था से निम्न अवस्था की ओर प्रवाहित होती है, उसी प्रकार मनुष्य की तरंगें (vibrations) प्रकृति और अन्य जीवों को प्रभावित करती हैं। आज जो असंतुलन चारों ओर देखा जा रहा है, वह मानव के आंतरिक स्तर और उसकी तरंगों



के प्रभाव के कारण है। जब आत्मा सच्ची जागरूकता में रहते हुए परमात्मा, सर्वोच्च दिव्य स्रोत से जुड़ती है, तब आत्मा सशक्त हो जाती है और अपने व्यवहार में दिव्यता प्रकट करती है, जिससे चारों ओर सब पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उन्होंने कहा कि आध्यात्म एक विज्ञान है जैसा सूत्र होगा, वैसा ही परिणाम होगा। प्रशासनिक प्रमुख, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू, राजयोगिनी बी.के. मोहिनी दीदी ने वीडियो के माध्यम से सभी प्रतिनिधियों का अभिवादन किया और अपनी प्रेरणाएँ साझा करते हुए कहा कि विचारों की शक्ति अत्यंत प्रभावी होती है, इसलिए उतार-चढ़ाव में भी स्थिर रहे, शरीर को सेवा में लगाएँ, संसाधनों का उचित प्रबंधन करें और सभी के प्रति प्रेम एवं स्नेह बनाए रखें। उन्होंने सभी के साथ आध्यात्मिक और अलौकिक संबंध रखने पर जोर दिया। न ही निराशा हो और न ही अति-समर्पण या आसक्ति। आत्म-जागरूक रहने का अभ्यास करना और दूसरों को भी उसी दृष्टि से देखना किसी भी कठिन परिस्थिति और व्यक्ति को अनुकूल बना देता है। बाधा-रहित बनने के लिए आत्म-जागरूकता का अभ्यास अत्यंत आवश्यक है। यह असंभव को संभव में बदलने में सहायक होता है। उन्होंने कहा कि हम प्रयास करें कि परमात्मा द्वारा हमें दी गई सच्चाई या ज्ञान का स्वाभाविक रूप से बोध हो, न कि केवल उसे जपते रहें। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि यहाँ साझा किए जा रहे शिक्षणों का प्रयोग करें, उन्हें अनुभव करें और सहज एवं स्वाभाविक योगी बनने का अभ्यास करें।

पैनल चर्चा

विषय: चेतन, नैतिकता और संस्कृति - संबंध और संघर्ष

डॉ. अभिषेक घोष, डीन ऑफ फैकल्टी, सोमैया इंस्टिट्यूट फॉर धर्मा स्टडीज़, मुंबई ने कहा कि भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ हमारी मौलिक संस्कृति को बचा सकती हैं, जिसे पश्चिमी मान्यताओं ने प्रभावित किया है। पश्चिम का यह विश्वास कि उनकी लायी हुई विज्ञान और तकनीक ही प्रगतिशील एवं उपयोगी है, ने हमारी जड़ों को कमजोर किया। उन्होंने कहा कि नैतिकता दो प्रकार की होती है - अंदर से बाहर (inside-out) और बाहर से अंदर (outside-in)। अंदर से बाहर का आचरण टिकाऊ और प्राकृतिक होता है, जबकि बाहर से अंदर का आचरण भय पर आधारित और दूसरों को प्रभावित करने के लिए होता है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें सबसे पहले अपने प्रति जवाबदेह होना चाहिए, तभी हम समाज और संस्कृति के प्रति उत्तरदायी हो सकते हैं। इसके लिए प्रेम और आशा का अभ्यास आवश्यक है। डॉ. जल्लंदर अंबेडकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सेंटर फॉर मैटेरियल्स फॉर इलेक्ट्रॉनिक्स टेक्नोलॉजी, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, पुणे ने मानसिक, शारीरिक और सामाजिक- तीन प्रकार की चेतना पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि जब मन स्थिर और स्वस्थ



होता है तो उसका प्रभाव शरीर और अंततः सामाजिक पक्ष पर भी पड़ता है। इसलिए हमें सचेतन चिंतन के माध्यम से भीतर छिपे खजानों को उजागर करना चाहिए ताकि अपेक्षाओं और पूर्तियों के बीच की खाई को पाटा जा सके। हर व्यक्ति अद्वितीय है और अपनी विशिष्टता से योगदान करता है। बी.के. सरोज, समन्वयक, दिल्ली SpARC विंग ने चेतना, नैतिकता और संस्कृति को बीज, फल और बगीचे की उपमा से समझाया। उन्होंने कहा कि चेतना बीज है, नैतिकता उसकी सुगंध है और संस्कृति बगीचा है। बीज की गुणवत्ता बगीचे की गुणवत्ता तय करती है। चेतना दोनों होती है भौतिक (बाहर से भीतर) और आध्यात्मिक (भीतर से बाहर)। आध्यात्म ही नैतिकता पर आधारित समाज की नींव है नैतिक संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए हमें

भीतर छिपी दिव्यता को पुनः जागृत करना होगा, विविधता की सराहना करनी होगी और आत्म-चेतना का अभ्यास करना होगा ताकि अधिक सहिष्णु, स्वीकारशील और समझदार बनकर समाज में वांछित सांस्कृतिक परिवर्तन ला सकें। श्री आर.के. जैन, वैज्ञानिक 'एच', लास्टेक, DRDO ने एक अच्छा शोधकर्ता बनने के लिए मन के चार गुण बताए - शान्त और प्रसन्न रहना ताकि सर्वोत्तम योगदान दे सकें। विनम्रता, जिससे जहाँ आवश्यकता हो, स्वयं में सुधार किया जा सके। जिज्ञासा, जिससे सीखने और बढ़ने की प्रेरणा मिले। धैर्य और दृढ़ता, जिससे उत्पादक शोध के लिए निरंतरता बनी रहे। उन्होंने बल दिया कि शोध मूल्य-आधारित होना चाहिए। सभी पैनलिस्टों ने पूछे गए प्रश्नों का तार्किक और प्रभावी उत्तर दिया।

ध्यान सत्र

चार दिवसीय कार्यक्रम के दौरान अनुभवी एवं वरिष्ठ बी.के. बहनें, जैसे, राजयोगिनी बी.के. उषा, बी.के. छाया, बी.के. मञ्जु, बी.के. सुमन ने राजयोग मेडिटेशन का ज्ञान प्रदान किया जिससे उपस्थित जनसमूह ध्यान की बारीकियों का अनुभव कर सके। कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों के बीच भी बी.के. बहनें, जैसे, राजयोगिनी बी.के. अल्का, बी.के. लवली, बी.के. नीलिमा, बी.के. श्वेता, बी.के. ममता ने मार्गदर्शित ध्यान के माध्यम से उपस्थित श्रोताओं को गहन शान्ति, प्रेम और दिव्य आनंद का अनुभव कराया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

अंबरनाथ से आर्यी, युवा बहनों और भाईयों तथा भारत के विभिन्न भागों से आए अन्य रचनात्मक प्रतिभाशाली युवाओं ने अत्यंत सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण राजयोगी बी.के. चंद्रकांत द्वारा प्रस्तुत मैजिक-शो रहा।

समापन सत्र



मुख्य अतिथि श्री अरुण रंजन मिश्रा, प्रोफेसर, संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग, भाषा भवन, विश्व-भारती, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल ने यह अनुभव साझा किया कि एक वैज्ञानिक ने हजारों पौधों और बेलों की खोज की लेकिन कोई भी ऐसा पौधा नहीं मिला जो औषधीय न हो। उन्होंने कहा कि कभी-कभी शोध में असफलता भी नये तथ्यों की खोज करा देती है। शोध नवाचार की ओर ले जाता है जो विकास और परिवर्तन में सहायक होता है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति केवल बहु (विषय interdisciplinary) अभ्यास से ही प्रगति कर सकता है न कि केवल किसी एक पर टिके रहने से। उनके अनुसार सामूहिक ध्यान से समाज में फैली बुराई, युद्ध और कुप्रथाएँ दूर की जा सकती हैं। मन लहरों के समान है जबकि आत्मा स्थिर है। ध्यान अर्थात् आत्म-सुझाव (auto-suggestion) और कल्पना (imagination) के माध्यम से मन को रिक्त कर स्थिर बनाया जा सकता है। डॉ. नीलिमा कामजुला, प्रोफेसर एवं डीन, वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय, सिग्मा विश्वविद्यालय, बकरोल, वडोदरा, गुजरात ने ब्रह्माकुमारीज आत्मसाक्षात्कार प्राप्त समुदाय का सर्वोत्तम उदाहरण बताते हुए कहा कि माँ प्रकृति ऊर्जा का अंतिम स्रोत है और हमें व्यक्तिगत स्तर पर उससे प्राप्त प्रेम का प्रतिदान करना चाहिए। यह आत्मबोध (self-actualization)

और सामूहिक कल्याण से संभव है। बी.के. भारती भाई, कोर ग्रुप सदस्य, SpARC विंग, बेंगलुरु ने चार दिवसीय सम्मेलन की संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत की। बी.के. वीना और बी.के. अश्विनी, मुंबई ने कठपुतली-शो के माध्यम से राजयोग और उसकी शिक्षाओं की प्रभावशीलता का सुंदर चित्रण किया जिसने अज्ञानता के अंधकार, भ्रांतियों और भ्रम को दूर करने का संदेश दिया। प्रो. डॉ. बी.के. रामाजयम, कोर ग्रुप सदस्य, SpARC विंग, मंडी ने SpARC की भावी शोध गतिविधियों के दायरे और संभावनाओं को साझा किया जिन्हें सहयोगात्मक रूप से या स्वतंत्र रूप से क्रियान्वित किया जा सकता है। श्री शशि भूषण तनेजा, चेयरपर्सन एवं निदेशक OS (सेवानिवृत्त), ISSA, DRDO ने साझा किया कि रक्षा प्रणाली, ऑटोमोटिव वाहनों, दूरस्थ नियंत्रित उपकरणों में यदि एआई के साथ अध्यात्म को जोड़ा जाए तो उन्हें रचनात्मक रूप से शक्तिशाली और उपयोगी बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अध्यात्म वह प्रदान करता है जो विज्ञान या ए.आई. नहीं कर सकता। इसलिए भविष्य का बीज बोते समय संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है। राजयोगी बी.के. अंबिका, चेयरपर्सन, SpARC विंग, बेंगलुरु ने प्रेरणादायक शब्दों में कहा कि रात के बाद दिन अवश्य आता है। उन्होंने आग्रह किया कि सम्मेलन से कुछ मूल्य लेकर समाज को उन्नत करने हेतु चिंतन और आत्मचिंतन अवश्य करें। उन्होंने कहा कि मूल्य आधारित समाज तभी स्थापित हो सकता है जब हम शक्ति के स्रोत परमात्मा से सही संबंध जोड़ें। परमात्मा ने वह ज्ञान और अभ्यास दिया है जो संसार को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक है। इसलिए परमात्मा से जुड़कर हमें अपने वास्तविक स्वरूप को कर्मों के माध्यम से प्रकट करना चाहिए। डॉ. अमुथा वरथराजू, विभागाध्यक्ष, आपातकालीन चिकित्सक, बुकित मर्तजम अस्पताल, मलेशिया ने अपने दिव्य अनुभव साझा किए जिनसे उनके पेशेवर कार्यों को लाभ मिला। उन्होंने इस मंच की प्रशंसा की जहाँ विविधता के बीच एकता और सामंजस्य का अनुभव किया जा सकता है। SpARC कोर ग्रुप सदस्य माउंट आबू, बी. के. संजय ने सत्र का समापन सभी उपस्थित लोगों और प्रतिनिधियों के प्रति आभार और कृतज्ञता व्यक्त करते हुए किया।

अनुभव की लेन-देन

कुछ प्रतिनिधियों ने अपने अनुभव एवं सुझाव साझा किए। उन्होंने कहा कि सम्मेलन में अंतरक्रियात्मक (interactive) तथा ध्यान एवं आध्यात्मिक पहलुओं को और अधिक बढ़ाया जाना चाहिए ताकि आंतरिक शान्ति और शक्ति का गहरा अनुभव हो सके। कई प्रतिभागियों ने यह महसूस किया कि ऐसे कार्यक्रम केवल आत्म-परिवर्तन में ही सहायक नहीं होते बल्कि अपने वातावरण और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने में भी मदद करते हैं।

Moments & Snaps

Moments of Reflection: Delegates in Harmony Hall



Senior Souls Leading with Vision



Rajyogini BK Ambika
Chairperson
SpARC Wing, Brahma Kumaris



BK Dr. Mruthyunjaya
Addl. Secretary General
Brahma Kumaris



BK Surya
Senior Rajyogi
Brahma Kumaris, Mt. Abu



Rajyogini BK Usha
Senior Rajyoga Teacher
Brahma Kumaris, Mt. Abu



During Plenary Session 1
Shri Sanjay Bansilal Chordiya
Dr. Padarabinda Rath



During Plenary Session 3
Dr. Girish Mittal, BK Balakishore
Dr. Pankaj Kumar

Special Guests: Sharing Wisdom and Grace



Padma Bhushan Dr. VK Saraswat
Hon'ble Member NITI AAYog



Shri Nilesh M. Desai
Director ISRO, SAC, Ahmedabad.



Dr. Kamatchi Iyer
Pro VC, Universal Skilltech University,
Mumbai



Shri Ajay Mahawar
MLA, Govt. of Delhi
New Delhi



Dr. Lalit Varma
Additional Chief Secretary (Retd.)
Govt. of UP, Lucknow



Dr. Vinod K Verma
President (All India)-Group Corporate
Affairs & Head Regulatory Affairs,
Hindalco, Delhi

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

SpARC, Gyan Sarovar, Po.Box. - 66, Mount Abu - 307501, Rajasthan

Mobile: +91-9772844861, +91- 9414003497, **Ph:** +91-2974-238788, **Extn #.** 7607, **Fax:** +91-2974-238951

Email: sparcwing@bkivv.org, bksparc@gmail.com